# संकुल स्रोत केन्द्रों में मासिक बैठक हेतु

द्वितीय वर्ष

## चर्चा पत्र - अक्टुबर, 2016

अंक –5

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान

स्वच्छ भारत अभियान
एक कदम स्वच्छता की ओर

राज्य परियोजना कार्यालय
राजीव गांधी शिक्षा मिशन
रायपुर, छ.ग.

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

# आपसे अपनी बात

देखते ही देखते Millennium Development Goal (MDG) की अवधि समाप्त हो गयी और अब हम आगे Sustainable Development Goals (SDG) की ओर बढ़ चुके हैं | सन 2015 तक के लिए MDG के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण का लक्ष्य रखा गया था जिसमे हमने कुछ प्रगति की है परन्तु अभी और भी बहुत कुछ किया जाना शेष है | इन सभी को हम SDG के माध्यम से पूरा करने का प्रयास करेंगे | इसके लिए हमें सन 2030 तक का समय दिया गया है | SDG के अंतर्गत कुल 17 लक्ष्यों में चौथा लक्ष्य गुणवत्ता शिक्षा से है | इसके अंतर्गत मुख्य रूप से हम सबको **प्री-प्रायमरी से लेकर हायर सेकन्डरी स्तर तक सभी बच्चों को बिना किसी भेद-भाव के** चाहे वे बालक-बालिका हो या किसी भी वर्ग समूह से हो, सभी को सामान रूप से बेहतर गुणवत्तायुक्त शिक्षा पूरी समानता के अवसर के साथ उपलब्ध कराना होगा | इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सभी को अपना मन बनाकर पूरे लगन से जुटना होगा |

हम आपको एक संकुल समन्वयक के रूप में अपने संकुल में शिक्षा से जुड़े सभी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए एक सी.ई.ओ. के रूप में देखते हैं | आपने जिले, जनपद पंचायत सीईओ को काम करते देखा होगा | बड़ी-बड़ी कंपनियों में भी सी.ई.ओ. होते हैं | उन्हें कार्य करने के लिए लक्ष्य दिया जाता है और वे अपने तरीकों से उस लक्ष्य को पूरे लगन, तन-मन-धन से समयसीमा के भीतर प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं चूकते | यहाँ आपको विभिन्न चर्चा पत्रों के माध्यम से अब तक दिए गए लक्ष्यों के शालाओं में क्रियान्वयन की समीक्षा करें | शालाओं में लर्निंग कार्नर, प्रिंट रिच वातावरण, वाल मैगजीन, मिशन स्टेटमेंट, डिक्टेशन, कहानी सुनाना, चित्रकला प्रतियोगिता, सहायक सामग्री, विज्ञान के सरल प्रयोग, कागज़ के खिलौने, छोटे-छोटे समूहों में कार्य, शिक्षकों को एक दूसरे से सीखने के लिए प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी आदि | देखें कि आपके प्रयासों का कितना असर शालाओं में हुआ है और इसे एक सीईओ के रूप में और कैसे प्रभावी बना सकते हैं|

संकुल की बैठकों के लिए राशि जारी हो रही है इसे जिले से तत्काल प्राप्त करें और मासिक बैठकों में संकुल के सभी शिक्षकों को अनिवार्यतः आमंत्रित कर उनका क्षमता विकास किया जाना सुनिश्चित करें | नियमित रूप से शिक्षकों को आगामी माह के पाठों की जानकारी और शिक्षण पद्धति के नवीन तकनीकों का उपयोग कर सिखाए जाने हेतु दक्ष करें| हमने तिल्दा में आयोजित प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के कार्यशाला के लिए गर अंक में नाम माँगा था | कुछ जिलों ने इसमें सक्रियता दिखाई है | अभी भी समय है, **इच्छुक लोग बताए गए नंबरों में अपना पंजीयन कराएं** | सहभागियों को इसमें उपस्थित होने का यात्रा भत्ता दिया जाएगा | इसी प्रकार आधुनिक तकनीकों से जुड़े रहने आपको कुछ वेबसाईट भी सुझाए गए थे, जिलों में शिक्षकों व्दारा इन वेबसाइट्स में पंजीयन की जानकारी हमें राज्य स्तर पर उपलब्ध हो जाती है और इसे हम आपकी सक्रियता का पैमाना मानते हैं | इस बार आपको सचिव, स्कूल शिक्षा महोदय के निर्देश पर शिक्षा गुणवत्ता में सुधार हेतु तीन बिंदु के सुझाव मांगे गए हैं और आपसे अपेक्षा करते हैं कि आप इस बार अवश्य अपने संकुल की उपस्थिति दर्ज करेंगे और अधिक से अधिक संख्या में अपने शिक्षकों की ओर से सुझाव भेजेंगे |

इस बार हम गत वर्ष “ए” ग्रेड में चयनित शालाएं जो स्वयं होकर अपने में सुधार लाने में सक्षम हैं, के साथ शाला सिद्धि नामक कार्यक्रम प्रारंभ करने जा रहे हैं | इस कार्यक्रम के अंतर्गत इस सभी **ए ग्रेड** शालाओं को अपना अपना आनलाइन स्व-आकलन माह नवंबर तक करना होगा | इस हेतु राज्य स्तर पर प्रशिक्षण संपन्न हो चुका है |

आशा है कि आप अपने संकुल की शालाओं में जन-प्रतिनिधियों एवं अधिकारियों व्दारा डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत माह जनवरी में आयोजित किए जाने वाले आगामी शैक्षिक भ्रमण के पूर्व अपनी शालाओं में बच्चों के साथ निर्धारित दस दक्षताओं में सुधार हेतु मेहनत कर रहे होंगे |

आप सभी को आगामी निरीक्षण में अपेक्षित सुधार के साथ साथ दशहरा एवं दीपावली की अग्रिम शुभकामनाएं !

# एजेंडा क्रं. 1 – स्वच्छ विद्यालय, पोटिया
# शिक्षकों की पहल पर शाला में बेहतर शैक्षणिक वातावरण

एक सार्थक प्रयास

**शासकीय प्राथमिक व उच्च– प्राथमिक शाला, पोटिया, विकासखण्ड– धमधा, जिला– दुर्ग**

**एक ऐसा विद्यालय जहां–**

- शिक्षक, पंचायत, जन–सहयोग और बच्चों के संयुक्त प्रयासों से शाला में बेहतर शैक्षणिक वातावरण निर्माण
- प्रत्येक शिक्षक द्वारा "शाला विकास व शैक्षणिक सुधार" हेतु स्वेच्छा से प्रति वर्ष एक निर्धारित राशि का योगदान– परिणामस्वरुप जनसमुदाय और ग्राम पंचायत्त द्वारा भी शाला विकास में बढ़–चढ़कर योगदान।
- शाला में स्थानीय सहयोग से प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर सुधार जैसे– मंच, शाला प्रांगण में बैठने हेतु बेंच, पेयजल सुविधा पात्र, वृक्ष व बागवानी, हाथ धुलाई प्लेटफार्म, प्रत्येक कक्ष में पंखे आदि।
- बच्चों के सक्रिय बाल संसद (टीम) द्वारा शाला विकास व प्रबंधन में प्रभावी भूमिका के साथ स्व–व्यक्तित्व विकास।
- बाल संसद के पदाधिकारियों (जैसे प्रधानमत्री, शिक्षा मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, सफाई मंत्री) के "name tag" के साथ पदाधिकारियों को शाला प्रबंधन में अपनी भूमिका की स्पष्टता।
- शाला में उपयुक्त स्थानों पर प्रेरणादायक दायक चित्र प्रदर्शन (display), सन्देश व समय–समय पर विशेष कार्यक्रमों के द्वारा, बच्चों में स्वच्छता व सफाई के प्रति विशेष रुझान और व्यवहार।
- "स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2016" में शाला को 5 स्टार रैंकिंग (Five star ranking)– वर्ष 2016 में "जिला स्तरीय "स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार" हेतु चयन व राज्य स्तरीय पुरस्कार के लिए चयन
- शाला के उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण के कारण बच्चों का समीप की निजी शाला को छोड़कर इस शाला में प्रवेश

***क्या आप भी अपनी शाला में ऐसा कुछ करना चाहेंगे? अपने संकुल की शालाओं को अगले वर्ष स्वच्छता पुरस्कार के लिए कैसे तैयार करेंगे ?***

## एजेंडा क्रं. 2 अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक में दिए गए Rhymes को लय-ताल के साथ गा पाने का मजा !

आंग्ल-भाषा शिक्षण संस्थान, रायपुर व्दारा उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यपुस्तक में दिए गए कविताओं की सीडी तैयार कर सभी शालाओं में उपलब्ध कराए जाने की सूचना दी है | इन सीडी को संकुल की बैठकों में प्रतिमाह कुछ समय निकालकर सुनाते हुए उस माह पढाए जाने वाले कविताओं पर शिक्षकों से पर्याप्त अभ्यास करवाया जा सकता है | इस कार्य के आयोजन हेतु अपने संकुल के कुछ शिक्षकों का एक दल बनाकर कार्य सौंपे |

- Learning English rhymes through songs
- Divide the teachers into groups.
- Each group will have 3-5 teachers.
- Get teachers to compose tunes for the rhymes in the textbooks of classes **1, 2 and 3**.
- Get them to present the tunes .
- Get comments for the tunes from all the teachers.
- Improve the tune.
- Let all the teachers learn the tunes.

## Points to ponder:

1. उक्त क्रियाकलाप का उद्देश्य क्या हैं? चर्चा करें |

   अपेक्षित उत्तरः

   The children will learn the rhymes easily.

   (i) The children who have more aptitude for learning through songs will be addressed.
   (ii) By singing the songs in local beats and tunes, children will find themselves closer to English Language.
   (iii) Children will overcome their fear for English to some extent.
   (iv) Children will continue the practice of English outside the class as well.

   उक्त क्रियाकलाप को आप कौन से कक्षा में कराना उपयुक्त समझते है?

   उक्त क्रियाकलाप करते हुए आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है? उनके क्या उपाय हो सकते हैं?

   उक्त क्रियाकलाप में आप क्या परिवर्तन करना चाहेंगे?

- ELTI, SCERT has produced audio CDs of all the poems in the textbooks of classes 6,7 and 8.
- All the Government Middle Schools have the CD. But it is not being used by most schools.
- The poems are recorded as songs – with the tune and music.
- Play the CDs and help the teachers learn the songs.
- **Practice the poems in the textbook of class 6.**
- Practice the songs during the meeting till all the teachers have learnt the songs.

अपने संकुल में यह पता करें कि यह सीडी वास्तव में सभी उच्च प्राथमिक शालाओं में पहुँची है अथवा नहीं ? यदि पहुँची है तो शालाओं में इसका उपयोग कैसे हो रहा है ? क्या शालाओं के पास इस सीडी को चलाने के लिए संसाधन उपलब्ध है ? क्या आप टेक्नोलोजी का उपयोग कर इस सीडी के पाठों को मोबाइल में डाउनलोड करने योग्य बना सकते हैं ?

क्या आपके संकुल में ऐसी कोई टीम है जो प्राथमिक कक्षाओं के पाठों / गीतों की रिकोर्डिंग स्थानीय स्तर पर कुशल शिक्षकों/ बाह्य विशेषज्ञों के साथ मिलकर कर सके और उसे व्हात्सेप्प के माध्यम से अपने साथी शिक्षकों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी ले |

**चलिए देखते हैं कि किस संकुल के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के सदस्य इस नेक कार्य में सामने आते हैं ? यदि आप तैयार हैं तो हमें अवश्य सूचित करें और सामग्री साझा करें |**

# एजेंडा क्रं. 3 – कक्षा में बातचीत : मौखिक भाषा विकास

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एल एल एफ)

*"बच्चे तो पैदा होते ही सुनना और कुछ ही महीनों में बोलना शुरू कर देते हैं। एक बार शुरू हो जाएँ ,तो उन्हें चुप करवाना मुश्किल हो जाता है! इसे अलग से सिखाने की क्या ज़रूरत है?"*

*"घर पर तो बच्चे बोलते ही रहते हैं, कम से कम स्कूल में तो चुप रहें। वहाँ वे पढ़ने आते हैं, बातचीत करने नहीं!"*

*"मौखिक भाषा विकास की केवल पहली कक्षा के शुरू के कुछ महीनों में ही ज़रूरत होती है। उसके लिए केवल अध्यापक द्वारा कहानी सुनाना ही पर्याप्त है।"*

## हमारी कक्षाओं में मौखिक भाषा की स्थिति

आपने अक्सर प्राथमिक कक्षाओं में देखा होगा कि अध्यापक जब कक्षा में पढ़ाते हैं, तो वह एक 'प्रस्तुतीकरण' जैसा होता है, जिसमें बच्चों के योगदान की कोई आवश्यकता नहीं होती । फिर अध्यापक पाठ पर आधारित सवाल पूछते हैं और अपेक्षा करते हैं कि 'होशियार' बच्चे उसका सही-सही जवाब दें । न ही पाठ पर कोई वार्तालाप होता है, न ही बच्चों में उत्साह । बच्चे केवल अध्यापक के सवालों का जवाब देने में एक निष्क्रिय भूमिका निभाते हैं ।

## मौखिक भाषा –केवल बोलनाऔर सुनना नहीं

हमारे देश के भाषा पाठ्यक्रमों में मौखिक भाषा विकास को अक्सर 'सुनना' और 'बोलना' के रूप में सूचीबद्ध किया जाता है ,परन्तु मौखिक भाषा के आयाम इससे कहीं ज़्यादा व्यापक है। मौखिक भाषा में बोलना और सुनना के अतिरिक्त शामिल है:

- समझना और प्रतिक्रिया देना
- नए-नए शब्दों को बातचीत में प्रयोग करना
- सार-संकलन करना
- सोचने के लिए बातचीत का सहारा लेना

## मौखिक भाषा विकास का महत्त्व

मौखिक भाषा वह नींव है जिसपर सम्पूर्ण भाषा- विकास टिका होता है । बातचीत बच्चों में सोचने की प्रक्रिया को पुख्ता करता है। जब अध्यापक बच्चों में मौखिक भाषा विकास के लिए पर्याप्त समय देते हैं और उचित रणनीतियों का इस्तेमाल करते हैं तो बच्चों की उच्च-स्तरीय चिंतन की क्षमता का विकास होता है ।

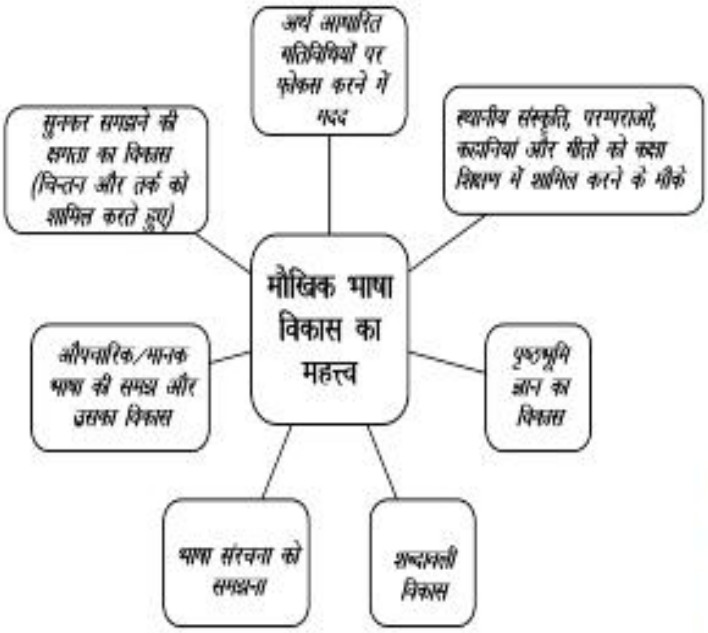


वे नई शब्दावली भी सीखते हैं और उनका पृष्ठभूमि-ज्ञान भी बढ़ता है । अधिक से अधिक मौखिक गतिविधियों के द्वारा उनके पढ़ने और लिखने की क्षमता भी बेहतर होती है । रूटमैन ने तो यहाँ तक कहा है - ***"सीखने की सभी प्रक्रियाएँ बातचीत पर आधारित होती हैं।"***

## मौखिक भाषा विकास कैसे करें?

मौखिक भाषा विकास के लिए आप अपनी कक्षा में कई प्रकार की गतिविधियाँ कर सकते हैं । कुछ ख़ास **उदाहरण** नीचे दिए गए हैं.

- **चित्रों पर बातचीत**- चित्र बातचीत का एक बहुत बढ़िया माध्यम हो सकता है । चित्र पर भिन्न प्रकार के प्रश्न और चर्चाएँ की जा सकती हैं, जैसे- चित्र में मौजूद तत्त्वों को पहचानना, हो रही घटनाओं के बारे में चर्चा और तर्क करना, उनमें सम्बन्ध **बैठाना,** चित्र में हो रही घटनाओं और पात्रों के बारे में भविष्यवाणी करना और कुछ स्थितियों में खुद को रखते हुए आरोपण करना ।
- **बच्चों द्वारा अपने अनुभवों, जगहों और घटनाओं का वर्णन** - बच्चों को अपने आस-पास के वातावरण, अनुभवों से **जुड़ी** चीज़ों पर और पुरानी घटनाओं के बारे में बात करना बहुत पसंद होता है।अपने भविष्य से जुड़ी चर्चा भी उन्हें खूब भाती है. कोशिश करें कि आप उनसे उनके अनुभवों के बारे में ढेर सारी चर्चा करें, उन्हें सोचने और प्रतिक्रिया देने का पूरा मौका भी दें । अपनी ओर से कम बोलें और बच्चों की बात गौर से सुनें ।
- **कहानियाँ सुनना और उन पर बातचीत**- कहानी सुनाते समय बच्चों से कैसे प्रश्न पूछे जा सकते हैं, वह नीचे के टेबल में विस्तार से दिया गया है:

| प्रश्नों के प्रकार | उदाहरण |
|---|---|
| अनुमान लगाने वाले प्रश्न | • तुम्हें क्या लगता है,आगेक्या हुआ होगा?<br>• उसने उस दस रुपये से क्या किया होगा? |
| कहानी के पात्रों का वर्णन (जो कहानी में न दिया गया हो) | • तुम्हें क्या लगताहै, वह लड़की किस गाँव से आई होगी?<br>• उसकी उम्र कितनी होगी?<br>• उस वृद्ध व्यक्ति के बारे में तुम क्या सोचते हो? |
| कैसे और क्यों वाले प्रश्न, खुले छोर वाले प्रश्न या मूल्यांकनपरक प्रश्न जिनके लिए बच्चों को सोचना पड़े और जिनका उत्तर थोड़ा लम्बा हो। | • उसने ऐसा क्यों किया होगा?<br>• उसे यह बात कैसे पता चली होगी ?<br>• तुम्हें क्या लगता है,दादी ने जो किया वह सही था या नहीं?<br>• यदि उस बच्चे की जगह तुम होते तो क्या करते? |

| | |
|---|---|
| कहानी को पुनः सुनाना | • कहानी में सबसे पहले क्या हुआ? इसके बाद क्या हुआ? |
| कहानी के किसी पात्र, स्थिति, घटनाअथवा कहानी के अन्त को बदलना | • क्या होता अगर इस कहानी में दादी मदद न करती?<br>• सोचो अगर वो माली अन्त में गाँव ही छोड़कर चला जाता, तो? |

- **अभिनय और रोल प्ले:** कक्षा में बच्चों के साथ अनौपचारिक रूप से अभिनय करने पर वह एक दूसरे से वार्तालाप करते हैं ,जो उनकी कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता बढ़ाने के साथ -साथ भाषा के उपयोग को बढ़ाने में भी मदद करता है ।
- **चित्रांकन :**बच्चे जब स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए चित्र बनातेहैं, और फिर उनके बारे में अध्यापक अथवा अन्य बच्चों को बताते हैं, तो वे सृजनात्मक मौखिक अभिव्यक्ति में निपुण होने लगते हैं।-
- **पठन से सम्बंधित मौखिक भाषा- विकास की गतिविधियाँ:** कक्षा में पाठ्यपुस्तक के पाठ पढ़ाते समय, तीनों चरणों में - पठन के पूर्व, पठन के दौरान और पठन के बाद, विभिन्न प्रकार से बच्चों की सहभागिता बढ़ाई जा सकती है। पाठ में दिए गए चित्रों पर बातचीत करें , उनसे प्रश्न बनवाएँ, उनसे राय व्यक्त करने के लिए कहें , बच्चों से कहानी को पुनः सुनाने के लिए कहें , उनसे कहानी में आगे की घटनाओं के बारे में अनुमान लगवाएँ । इसके अलावा भी बच्चों के साथ जितना हो सके पाठ पर चर्चा करें ।
- **मौखिक भाषा-विकास के खेल :** मौखिक भाषा विकास के लिए विविध प्रकार के खेल हो सकते हैं, जैसे – सामूहिक प्रयासों से कहानी का निर्माण करना, वस्तुओं का अंदाज़ा लगाना, निर्देश देना और निर्देशों का पालन करना आदि ।

## चित्र पर बातचीत का उदाहरण

नीचे शिक्षक और बच्चों में हो रहे वार्तालाप को पढ़ें . वे दिए गए चित्र पर बातचीत कर रहे हैं । ध्यान दें कि

- ✓ शिक्षक किस प्रकार बच्चों की बात को आगे बढ़ा रहे हैं ।
- ✓ शिक्षक किस प्रकार खुले छोर वाले और मूल्यांकनपरक प्रश्न पूछकर बच्चों के पूर्व ज्ञान तथा अनुमान लगाने की क्षमता को बढ़ाने में मदद कर रहे हैं । इसके अलावा बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित भी कर रहे हैं ।ऐसे प्रश्न बच्चों की उच्चस्तरीय सोचने की क्षमता को विकसित करने के लिए आवश्यक होते हैं ।

---

शिक्षक (*बच्चों को चित्र दिखाते हुए): यह देखो! मेरे हाथ में कौन -सा चित्र है! ज़रा देखकर बताओ, आप को इस में क्या-क्या दिख रहा है?*

एक आदमी है , जिसने मछली पकड़ी है ।।

*हम्म .... सही कहा ! क्या कोई बता सकता है कि मछली पकड़ने वाले को क्या बोलते हैं ?*

(बच्चे उत्साहित हो कर एक साथ बोलते हुए) मछुआरा!!!

***बिलकुल सही! तो ठीक है.....चित्र में हमें एक मछुआरा दिख रहा है । और ?***

वह नदी के किनारे है ।

पास में एक टोकरी भी पड़ी है ।

***(सोचने का भाव दिखाते हुए) : आपको क्या लगता है, यह टोकरी यहाँ क्यों रखी होगी ?***

मछुआरा पकड़ी हुई मछली इसमें डालेगा और घर लेकर जाएगा ।

लेकिन उसके पास तो एक ही मछली है!! और टोकरी इतनी बड़ी!

***शिक्षक (बच्चों के साथ हँसते हुए): हहाहाह, बात तो सही है! इतनी बड़ी टोकरी और एक ही मछली! क्या आप इसकी वजह सोच सकते हो? क्यों सिर्फ एक ही मछली?***

नदी में मछलियाँ ख़त्म हो गई होंगी ।

***हम्म .... हो सकता है।ज़रा खुलकर बताओ ऐसा क्यों हुआ होगा?***

बाकी सब मछुआरे पहले ही मछलियाँ पकड़ कर ले गए होंगे ।

***मुझे नहीं लगता कि वे इतनी मछलियाँ खा गए होंगे !***

अरे नहीं! वे बेचने के लिए ले गए होंगे ।

पैसे कमाने के लिए ।

एक बच्चा सोचते हुए: अब तो मछलियाँ ख़त्म हो गई । अब वह क्या करेगा?

*10-15 सेकंड तक कोई नहीं बोला ।*

***शिक्षक (फिर बात को आगे बढ़ाते हुए): क्या आप इसका कोई उपाय सोच सकते हो?***

कैसा हो अगर हम दूसरी नदी से मछली यहाँ लाकर इस नदी में डाल दें!

सभी बच्चे फिर खुश होते हुए: हाँ ! यहाँ बहुत सारी मछलियाँ लाकर डाल सकते हैं ।

और एक बोर्ड भी लगा देंगे ,जिस पर लिखा होगा- 'मछली पकड़ना मना है।'

***तो क्या अब मछुआरा पैसे नहीं कमा पाएगा ?***

बच्चे अपनी बात की सफाई देते हुए: नहीं, हम उसे कहेंगे की कुछ दिनों के लिए कहीं और जा कर मछली पकड़ ले । बाद में फिर यहाँ वापिस आ जाए ।

***हाँ । यह हो सकता है! चलो, इस कहानी को ज़रा आगे बढाएँ । (शिक्षक मुस्कुराते हुए): सोचो तो, जब मछुआरा एक ही मछली ले के घर गया होगा, तो क्या हुए होगा?***

सब बच्चे प्रश्न सुनते ही उत्साहित होते हुए.....

---

क्या आप इस बातचीत में पूछे जा रहे ऐसे प्रश्न ढूँढ सकते हैं ,जो बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने और पूर्व ज्ञान को जागृत करने के लिए प्रोत्साहित करते हों ?

## बातचीत के दौरान ध्यान देने योग्य बातें :

बातचीत को प्रोत्साहन देने के लिए कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है, जैसे:

- ✓ बच्चों की बात को गौर से सुनें और "अच्छा ", "हम्म्म" "अरेवाह " जैसे शब्दों का इस्तेमाल करके अपनी प्रतिक्रिया भी ज़रूर दें।
- ✓ यह अवश्य सुनिश्चित करें कि ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को सहभागिता का मौका मिले।
- ✓ बच्चों को नियमबद्ध तरीके से कहानी सुनाने या चित्र पर बात करने के लिए अधिक से अधिक अवसर दें।
- ✓ कक्षा में ऐसा माहौल बनाएँ की बच्चे अपनी बात बिना डर और झिझक के कह सकें।
- ✓ संवाद को आगे बढाने के लिए बच्चों को उकसाएँ, उनकी बात को दोहराएँ , उनकी बात को अलग ढंग से कहें और उनकी बात को विस्तारित करें।
- ✓ हाँ / नहीं के उत्तर वाले प्रश्नों के बजाए खुले छोर वाले प्रश्न पूछें।
- ✓ निर्देश देने के लिए छोटे और स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करें।
- ✓ बच्चों को जोड़ों या समूहों में बैठाएँ और चर्चा तथा आदान -प्रदान के लिए नियमित व्यवस्था करें।
- ✓ बच्चों को उत्तर देने के लिए समय दें। आप आतुरता में स्वयं उत्तर न दें।
- ✓ बातचीत करते हुए कुछ नए शब्दों का प्रयोग करें।
- ✓ बच्चों ने जो कुछ सीखा है, उसे पूरी कक्षा के साथ सांझा करने के लिए आगे बुलाएँ ।
- ✓ किसी भी अध्याय या शीर्षक के तहत बातचीत व चर्चा के अवसरों की योजना बनाएँ ।

याद रखें, छोटे बच्चे मुख्य रूप से बातचीत से ही सोचते हैं।बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने के मौके दे कर अध्यापक बच्चों में सोचने और समझने के कौशल को विकसित करने में उनकी मदद कर सकते हैं।

लेंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एलएलएफ) द्वारा स्रोत व्यक्तियों को दूर शिक्षा के माध्यम से भाषा और साक्षरता विकास पर प्रशिक्षण देने का कार्य करती है। ऐसे संकुल समन्वयक जो इस पाठ्यक्रम में शामिल होना चाहते है में अपना विवरण श्री ओमनारायण शर्मा, महासमुंद– 09907978910 के पास जमा कर सकते है।

वेबसाइट :http://www.languageandlearningfoundation.org/

# एजेंडा क्रं. 4 बाल सभा के बहाने

विद्यालय में शिक्षकों की बैठक सम्पन्न हुई बैठक का एकमात्र अजेंडा था विद्यालय में बाल सभा का आयोजन करना है | बाल सभा में किन कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा ? उन्हें किए जाने की प्रक्रिया क्या होगी ? बहुत सारे प्रश्न शिक्षकों के मन में थे | बाल सभा में जिन गतिविधियों को जगह दी गई वे कुछ इस प्रकार है -

- अखबार पठन : इसमे अखबार के चयन को लेकर बातचीत हुई कि क्या जो अखबार विद्यालय में आता है, उसे पढ़ें या कुछ और .....तब एक बात आई क्या बच्चे अपना अखबार बना सकते है? अधिकतर शिक्षक साथी यही तर्क देते कि बच्चे अखबार नही बना सकते | फिर सोचा गया की कहीं से तो शुरुआत करनी होगी - देखते है की बच्चे क्या करते है? बच्चे बाल सभा से पहले अखबार का निर्माण करेंगे और बाला सभा मे प्रस्तुत करेंगे| इस संशय के साथ इस गतिविधि को शामिल किया गया |
- नाटक : बच्चों को नया नाटक बनाने के लिए काहें या पाठ्यपुस्तक में निहित नाटक का मंचन करें, इस बार शिक्षक थोड़े पाठ्यपुस्तक पर केन्द्रित हुए और कहा की अगर पाठ्यपुस्तक के नाटक का मंचन कराते है तो वे उस विषयवस्तू को और गहराई से समझ पाएंगे | इस पर भी सहमति बनी और यह भी तय किया कि नाटक निर्माण कर उसे मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर कक्षा चार और पाँच के बच्चों को दिया जाना चाहिए | इसका कारण ये था कि कक्षा चार और पाँच के बच्चे नाटक की विषय वस्तू के अनुरूप संवाद बोल पाएंगे |
- कविता : इसके लिए सभी शिक्षकों की एक जुट सहमती बनी | तय हुआ की पाठ्यपुस्तक से बाहर की कविता खोजने के लिए बच्चों को प्रेरित करेंगे |
- संवाद : इसमें बच्चों को कुछ थीम दे सकते है |
  - घर पर मेहमान आते हैं तो माँ कैसे बात करती है |
  - किसान को अपने खेत के बारे में दूसरे किसान साथी से बात कर रहे हो तो |
  - गाँव में सार्वजनिक गणेश पूजा का आयोजन करना हो तो |

दो तीन दिन काम करने के बाद यह महसूस हुआ कि सभी कक्षाओं में बच्चे केवल बाल सभा की तैयारी ही कर रहे है,

ऐसे में वे और विषय कब पढ़ेंगे जिसमे गणित विज्ञान और पर्यावरण आदि ..... और बाल सभा तो हर सप्ताह करना है | अब मुश्किल बढ़ रही थी एक शिक्षक ने सबसे आसान तरीका सुझाया कि ऐसे में हमें बाल सभा नही करना चाहिए |" प्रधान पाठक ने कहा "ऐसा नही है, जो स्कूल बाल सभा कर रहे है उनसे पूछते है की उन्होने इस समस्या को कैसे हल किया ?" इस बात चीत को इस सहमती के साथ समापन किया गया कि इस बारे मे और विद्यालयों के प्रधान पाठको और बाल सभा के प्रभारी शिक्षकों से बात करेंगे |

प्रधान पाठक ने दूसरे विद्यालय के प्रधान पाठक से बात की, उन्होने बताया कि हम बाल सभा के लिए जो गतिविधियां करते है इसमे कोशिश यह करते है कि यह गतिविधिया शिक्षकों द्वारा भाषा की कक्षाओं मे किया जाता है| इस पर यह संदेह आया कि क्या भाषा की कक्षा का समय अन्य विषय के अध्यापन में लगने वाले समय से अधिक नहीं होगा ? इस प्रश्न के लिए दुसरे विद्यालय के अध्यापक ने कहा, जब गतिविधियों को हम कक्षा में पहली बार कर रहे होते है तब एक तरह की अफरा-तफरी होती है| जब बच्चों को हम छोटे-छोटे निर्देश देते हैं और प्रक्रिया को दोहरा रहे होते हैं तो बच्चे खुद ब खुद प्रक्रियाओं में सहयोग करने लगते है |

शिक्षकों ने सोचा कि कक्षा में करके देखते है| पाँचवी कक्षा की शिक्षिका ने दो से तीन बच्चों का एक समूह बनाया और उन्हें कक्षा में पढ़ने के लिए दो तीन दिन पुराना अखबार दिया| बच्चों से कहा, इसमें आपको जो अच्छा लगता है उसे पढ़ना| सब लोग कोई भी एक समाचार को पढ़ना | बच्चे अपने अपने अखबार को उलट पलट कर देखने लगे| उसके बाद किसी एक खबर या विज्ञापन पर अधिक केन्द्रित होकर पढ़ने लगे| कोई विज्ञापन के चित्रों को देखता, कोई सुर्खी को पढ़ता| इस प्रकार आधे घंटे से अधिक समय बच्चों ने अखबार को पढ़ने में ही लगा दिया | इसके बाद शिक्षिका ने बोर्ड पर कुछ श्रेणियाँ बनायीं| जैसे खबरें, विज्ञापन नाम, आदि| अब बच्चे अपनी पढ़ी हुई बात बताते तो शिक्षिका उन्हे उस डिब्बे में लिख देती जैसे: किसी समूह ने पढ़ा " सड़क पर रखा सामान पुलिस के द्वारा हटाया गया  बच्चों ने तो केवल खबर को पढ़ा था, उसके अंदर की पूरी बात को वे पढ़ नहीं पाये थे | इस बात को शिक्षिका ने खबर वाली श्रेणी में लिखा |

शिक्षिका ने पूछा "पुलिस ने समान क्यों हटवाया होगा ?"

बच्चों ने कहा "रद्दा माँ समान मन ल राखही त चलबों कंहा ?"

शिक्षिका : किसी अखबार में किस प्रकार की खबरें आती हैं ?

बच्ची ने कहा "ओ में त बड़े बड़े मन के नाम आथे | जो दिल्ली में रथे ओखर मन के"

शिक्षिका ने पूछा "अखबार के होने से क्या होगा और नही होने से क्या होगा ?"

बच्चे ने कहा "अपने आस पास का होते नहीं जान सक्बो, इस्कूल प्रार्थना में काला पढबो ? रंगीन चित्र मन ला देखे बर नई मिलही |"

शिक्षिका "सही कह रहे हैं, ये सब तो नहीं होगा पर इन सबके साथ साथ समाचार पत्र के और बहुत सारे उपयोग है |"

हमें बहुत सारी जानकारियाँ, किसी बात के बारे में विचार करने की दिशा, सामाचार पत्रों से ही मिलती हैं | जैसे विज्ञापनों से यह जानकारी मिलती है कि,

- कौनसी और किस प्रकार की चीजें आस पास उपलब्ध है ?
- बेरोज़गार लोगों को नौकरियों के बारे में जानकारी मिलती है|
- समाचारों के माध्यम से समाज में क्या हो रहा है? जो हो रहा है उसके लिए हम क्या कर सकते हैं ? इन सब बातों पर विचार करने के लिए भी तैयार करता है |

कुछ इस तरह की बातचीत की गयी | इतना काम होते होते भाषा का एक पीरियड का समय समाप्त हो गया |

शिक्षिका ने कहा अब हम गणित पढ़ेंगे | बच्चे बिलकुल भी सहमत नही थे, उन्हें लग रहा था कि इस काम को आगे बढ़ाया जाय | तब शिक्षिका ने कहा इसी काम को हम कल फिर करेंगे तब बच्चे भी तैयार हो गए | बच्चे अगले दिन का बड़ी बेसब्री से, भाषा की कक्षा का, इंतजार कर रहे थे |

अगले दिन समाचार पत्र पर बातचीत के लिए शिक्षिका ने कहा पहले हम थोड़ी देर पाठ्यपुस्तक के उस पाठ को पढ़ते है जिसे हम पढ़ रहे थे, उसके बाद कल वाली बातचीत को आगे बढ़ाएंगे | शिक्षिका ने बच्चों को उनके पाठ के मुहावरों के प्रयोग, रिक्त स्थान, पाठ के संदर्भो पर एक बार पुनः बातचीत की| इस पूरी प्रक्रिया को करने में शिशिका को १५ से 20 मिनट का समय लगा | इसके पश्चात शिक्षिका ने बच्चों से पूछा कि इसी तरह से यदि आपको अपना समाचार पत्र बनाना हो तो आप लोग अपने समाचार पत्र में क्या-क्या लिखेंगे ? इस बार बच्चों ने एक सूची बनाई | सूची कुछ इस प्रकार से बनी |

- हमारे स्कूल के बारे में
- गाँव में हुए कबड्डी प्रतियोगिता के बारे में
- हमारा पहला समाचार पत्र
- हमारे विद्यालय का विज्ञापन
- एक कहानी

अपने समाचार पत्र की रूपरेखा निर्मित करने के बाद उसके नाम और नियमितता पर विचार करना शुरू हुआ | पहले तो बच्चों ने नवभारत और दैनिकभास्कर जैसे नाम सुझाए | एक दो बच्चों ने कहा, " यह हमारा समाचारपत्र है हम इसका नाम भी नया ही रखेंगे |" कुछ नाम बच्चों ने सुझाएँ , कक्षा पांचवी का समाचार पत्र, कुकडू कू, हमारा अखबार | इन तीनों नामों के लिए बच्चों ने अलग अलग तरह के तर्क दिए | समाचार पत्र के लिए "कुकडू कू" चुना गया | इसे चुनने का तर्क यही था कि जिस प्रकार से मुर्गा सुबह सुबह बांग देकर जगाता है उसी प्रकार समाचार पत्र भी देश दुनिया के बारे बताकर हमें जगाता है|

कई बार हम जिन कार्यक्रमों की योजना बनाते है उन्हें कर नहीं पाते, उसके कई तत्कालीन कारण होते हैं पर उस कार्यक्रम को करने के लिए जो तैयारी की जाती है वो व्यर्थ नहीं होता | यदिउनके परिणाम बहुत सकारात्मक तरीके से बच्चों के सीखने को प्रभावित करते है तो उन प्रक्रियाओं को भी दर्ज किया जाना चाहिए | बाल सभा के बहाने से बच्चों ने कई ऐसे मुद्दों पर विचार किया जिस पर उन्होंने कभी चिंतन नहीं किया था | शिक्षकों को भी अपने विद्यालय में किसी काम को करने की तैयारी के लिए लगने वाले समय और प्रक्रियाओं का अंदाज हुआ| इस तरह से एक बार की तैयारी के पश्चात शिक्षकों और बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा जो इस पूरी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पक्ष है |

# एजेंडा क्रं. 5 विश्व हाथ धुलाई दिवस (अक्टूबर 15, 2016)

## शाला में साबुन से सुरक्षित हाथ धुलाई

विश्व हाथ धुलाई दिवस की शुरुआत, 15 अक्टूबर 2008 से की गयी है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2008 को स्वच्छता के अंतरराष्ट्रीय वर्ष के रूप में मान्यता दी थी, और इसी वर्ष से हाथ धुलाई दिवस, के माध्यम से विश्व में "बेहतर स्वच्छता व्यवहार" के अपनाने की अपेक्षा की गयी है। साबुन से हाथ धोने के महत्व, को मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा **"स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय 2014"** के अंतर्गत प्रत्येक स्कूल में एक मूल आवश्यकता के रूप में मान्यता दी है। इसके सन्दर्भ में समबधित मार्ग निर्देशिका व अन्य स्रोतों से, कुछ खास तथ्य इस प्रकार से हैं–

1. विश्वस्त प्रमाणों के आधार पर यह कह सकते है कि **केवल खाना खाने** या **बनाने से पहले** और **शौचालय का उपयोग** करने के बाद, साबुन से हाथ धोने से **डायरिया को 45% तक** और **तक तीव्र श्वसन संक्रमण (ARI) के जोखिम को 23% तक** कम कर सकते हैं।

2. स्कूलों में हाथ धोने की व्यवस्था हो, तो प्राथमिक स्कूलों के बच्चों में स्कूल से गैरहाजिर रहने की संभावना घट जाती है। चीन की जिन प्राथमिक पाठशालाओं में साबुनों के **प्रचार और उपयोग प्रभावी रूप से सुनिश्चित** की गई है, वहां अन्य स्कूलों के मुकाबले **54 प्रतिशत कम गैरहाजिरी दर्ज** की गई (बॉवेन तथा अन्य 2007)।

3. मध्य भारत (वर्धा जिले) में स्कूल जा रहे बच्चो (06–14 वर्ष) के बीच पेट में कीड़ों का संक्रमण का प्रसार, **बिना कटे नाखूनों के कारण 23 गुना ज्यादा** और **कमजोर हाथ धोने की प्रथाओं के कारण 08 गुना ज्यादा** पाया गया।

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2016 से प्रारम्भ **"स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार"** के अन्तर्गत, इस गतिविधि को महत्वपूर्ण व्यवहार के रूप विशेष महत्व (20% Weightage out of total 100%) दिया गया है |

### साबुन से हाथ धुलाई के मुख्य 8 चरण

WHO के मार्ग निर्देशन के सन्दर्भ में साबुन से हाथ धुलाई के मुख्य 8 चरण इस प्रकार से सुझाए हैं, जिन्हें प्रत्येक कक्षा में अभ्यास में लाकर एक व्यवस्थित तरीके से किया जाकर प्रत्येक बच्चे की आदत में शामिल किया जा सकता है ।

तो क्या आप तैयार हैं, अपने स्कूल को – प्रतिदिन साबुन से हाथ धुलाई के क्षेत्र में एक आदर्श स्कूल के रूप में परिवर्तित होता देखने के लिए!

*"भोजन से पहले एवं शौच के बाद, हमेशा धोऐ साबुन से हाथ।"*

**शिक्षा गुणवत्ता में सुधार हेतु आपके सुझाव**

यदि आपके पास अपने राज्य में शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने की जिम्मेदारी हो और आपको किन्हीं तीन महत्वपूर्ण योजनाओं / कार्यक्रमों को वर्तमान परिस्थितियों एवं उपलब्ध संसाधनों के भीतर निर्धारित समयसीमा में तैयार कर उनके क्रियान्वयन करने की छूट दी जाए तो प्राथमिकता के क्रम में आप क्या क्या करना चाहेंगे ?

आप अपने विचारों को सीधे पोस्टकार्ड के माध्यम से, एस.एम.एस., व्हाटसएप्प, ईमेल के माध्यम से भेज सकते हैं। हमारा पता है- मिशन संचालक, राज्य परियोजना कार्यालय, राजीव गांधी शिक्षा मिशन, माध्यमिक शिक्षा मंडल परिसर, पेंशन बाडा, रायपुर, छग – 492001

SMS/ व्हाटसएप्प भेजने हेतु मोबाइल नंबर हैं – डॉ. एम. सुधीश - 9425507257 श्री बी.डी. सिंह - 7747012815 हमारा ईमेल है- mis.head@gmail.com

*(विषय – "शिक्षा में गुणवत्ता हेतु सुझाव" – अवश्य लिखें)*